राजयोगिनी दादी जानकी जी

मुख्य प्रशासिका ब्रह्माकुमारीज

जीवन वृत्त

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के कार्यों का संचालन करने एवं इस संस्थान का विकास करने के कार्य में राजयोगिनी दादी जानकी जी का जीवन अनूठा रहा है। 91 वर्ष की आयु में दादी जानकी जी इस संस्थान की मुख्य प्रशासिका नियुक्त की गयी है।

आजादी के तुरन्त बाद, जाति प्रथा सहित अनेक सामाजिक परम्पराओं के बंधनों को तोड़ते हुए दादी जानकी जी भी एक सक्रिय महिला आध्यात्मिक नेत्री के रूप में उभरीं। दादीजी ने सम्पूर्ण भारतवर्ष का भ्रमण किया और महिलाओं को आत्म संयम का पाठ पढ़ाया तथा उन्हें सिखाया कि वे किस प्रकार अपने समुदाय को नेतृत्व प्रदान कर सकती हैं।

बचपन से ही दादी जानकी जी को इस बात की चिंता बनी रहती थी कि वे किस प्रकार दूसरों के जीवन को सुखी बना सकेगी। उनकी प्रारंभिक शिक्षा अनेक भारतीय शास्त्रों के अध्ययन से ओत-प्रोत रहीं और, उन शास्त्रों की अनेक बातें तो दादीजी को पहले से ही कंठस्थ थीं।

अपने जीवन के एक बड़े काल तक दादीजी शारीरिक व्याधियों से ग्रस्त रहीं। इसके परिणाम स्वरूप उन्हें इस बात को जांचने का मौका मिला कि वे किस हद तक अपनी शारीरिक व्याधियों के प्रभाव से अपने मन को मुक्त रख सकती हैं, तथा उन्होंने उस दौरान यह भी सीखा कि उन्हें किस प्रकार अपनी इन व्याधियों पर विजय प्राप्त करनी है। अपने प्रारंभिक जीवन काल के इन अनुभवों ने प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की स्थापना के काल खंड में उन्हें अनी भूमिका के निर्वाह में बहुत सहयोग दिया। आनेवाले दिनों में यही संस्थान एक विश्व व्यापी शैक्षणिक संस्थान के रूप में स्थापित हुआ। सन् 1937 से लेकर सन् 1950 तक इस संस्थान के करीब 400 सदस्यों को जिनमें से अधिकांश महिलाएं थीं, एक साथ मिलकर रहने का अवसर प्राप्त हुआ और अनेक बार ऐसे अवसर भी आए जबकि भौतिक व शारीरिक रूप से उनके सामने अनेक कठिनाईयां आयी। दादी जानकी जी को एक नर्स के रूप में सेवा का कार्य दिया गया जिसके लिए अत्यधिक श्रम एवं कौशल की आवश्यकता होती है। दादी जी ने इस कार्य का निर्वाह कितनी खूबियों के साथ किया इसका पता इस बात से चलता है कि स्थापना के उन 14 वर्षों में किसी चिकित्सक को मात्र तीन या चार बार ही उनके आश्रय स्थल पर बुलवाया गया।

सन् 1974 में दादी जी ब्रिटेन पहुंची जहाँ उन्हें ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के एक केन्द्र की स्थापना करने एवं उसका संचालन करने की जिम्मा सौंपा गया था। उन्हें पश्चिमी जगत के लोगों को आत्म संयम एवं आध्यात्मिकता को अपनाने के लिए प्रशिक्षित करना था। उन्होंन महिलाओं को आत्म सम्मान जगाने एवं स्वावलंबी बनने की प्रेरणा प्रदान की। उनकी विद्वता के कारण अनेक धर्मों एवं मतों की अनेक महिलाओं को जरूरत के समय अपने अंदर साहस को जगाने तथा अपनी मदद स्वयं करने की दृष्टि प्राप्त हुई। सर्व के लिए समदृष्टि रखने के कारण दादीजी ने लाखों लोगों को इस बात के लिए प्रेरित किया कि वे आपसी भेदभाव को भुलाकर मिलजुल कर सौहार्दपूर्वक अपना जीवन यापन करें।

उनकी प्रेरणा से एवं उनके निर्देशन में आज ब्रिटेन में अनेक ईश्वरीय केन्द्र स्थापित किये जा चुके

हैं तथा दुनिया के करीब 130 देशों में भी ईश्वरीय केन्द्रों की स्थापना हो चुकी है। सभी सेवाकेन्द्र लोगों का सशक्तिकरण करने, उनके अंदर सकारात्मकता का उपार्जन करने तथा सुदूर इलाकों के लोगों के जीवन को प्रकाशित करने के कार्य में संलग्न हैं। संस्थान के विद्यार्थी एवं शिक्षक-शिक्षिकाएं अस्पतालों, विद्यालयों, जेलों, शरणार्थी शिविरों, बेसहारा बच्चों, वेश्याओं एवं व्याधिग्रस्त लोगों के छात्रावासों में जाकर उनकी सेवा करते हैं तथा व्यसनियों को भी व्यसन मुक्त करने की कोशिश करते हैं। इन 130 से भी अधिक देशों में व्यक्तिगत रूप से जाकर दादीजी ने देखा है कि सभी वर्गों के लोगों के लिए इस प्रकार की सेवाएं जारी हैं।

129 देशों में अंतराष्ट्रीय कार्यक्रमों, मूल्यों एवं योजनाओं के क्रियान्वयन के लिए जमीनी स्तर पर दादी ने शुरूआत की है। परिणाम स्वरूप अनेक लोगों एवं समुदायों के लोगों का जीवन स्तर विकसति हुआ है। तथा पर्यावरण की स्थिति में भी सुधार लाया गया है।

दादी जानकी जी आध्यात्मिक एवं धार्मिक लोगों के एक संगठन **''कीपर्स ऑफ विजडम''** की एक मान्य सदस्या हैं। मानव आवास एवं पर्यावरण की समस्याओं से सम्बन्धित अनेक आध्यात्मिक रूप से द्विविधा ग्रस्त स्थितियों के समाधान के लिए राजनीतिज्ञों द्वारा उठाई गयी समस्याओं के समाधान के लिए यह संगठन कार्य करता है, और दादीजी की इसमें महती भूमिका रहती है। रियों में संपन्न अर्थ सम्मेलन एवं इस्ताम्बुल में सम्पन्न हैबीटैट-2 में विजडम कीपर्स द्वारा सम्मेलन का आयोजन किया गया था।

उनके सम्मान में 1977 में लंदन में जानकी फाऊंडेशन फार ग्लोबल हेल्थकेयर की स्थापना एवं सेवाओं की शुरुआत की गयी थी।

अपने अनेक वर्षों की मानवीय सेवा के दौरान दादीजी का हमेशा यह प्रयत्न रहा कि मनुष्यों के सर्वांगिण विकास का प्रयत्न किया जाना चाहिए जिससे कि उनका भावनात्मक, आध्यात्मिक, रचनात्मक एवं सामाजिक विकास हो सके। दादीजी ने ऐसा ही किया।

प्रकाशित पुस्तकें

- विंग्स ऑफ सोल, 1999 में हीथ कम्यूनिकेशन्स के द्वारा
- पर्ल्स ऑफ विजडम, 1999 में हेल्थ कम्यूनिकेशन्स के द्वारा
- कम्पेनियन्स ऑफ गॉड, 1999 में बी. के. आई एस द्वारा
- इनसाईड आऊट, 2003 में बी. के आई एस द्वारा
- दादी जानकी द्वारा आम जन के लिए की गयी सेवाएं

- 2007

- दादी प्रकाशमणि जी के निधन के बाद 27 अगस्त 2007 को दादी जानकी जी को ब्रह्माकुमारीज संस्थान की मुख्य प्रशासिका का कार्यभार सौंपा गया।
- सेंटर ऑफ एक्सेलेंस न वीमेंस हेल्थ, कैलीफोर्निया, सन फांसिस्को में मुख्य वक्ता के तौर पर प्रवचन
- सेक्रोमेंटों के स्प्रीचुअल लाईफ सेंटर के वरिष्ठ मंत्री माईकेल मोरन के साथ सेक्रेटस ऑफ टाँसफार्मेशन पर चर्चा

-2006

- जस्ट ए मिनट के प्रारम्भ के अवसर पर रोबिन गिब्स द्वारा रचित कविता मरद ऑफ लव, दादी जानकी को समर्पित किया गया।

- दादी जानकी एवं एंड्रयू पावेल ने आक्सफोर्ड टाऊन हॉल में, हम जानते हैं कि 'कैसे जीवन बिताया जाए और कैसे मृत्यु का वरण किया जाए'' इस विषय पर चर्चा की।

-2005

- लंदन में आयोजित एक त्रिदिवसीय सम्मेलन - बी द चेंज के दूसरे दिन **'मनुष्य एवं उनका ग्रह'** नामक विषय पर मुख्य वक्ता के रूप में अपने विचार प्रकट किए।

- कैंब्रिज अमेरिका में दादीजी को 'करेज ऑफ कंशेन्स' अवार्ड प्रदान किया गया।

- जून 2005 में मियामी में संपन्न What the Bleep do we know? नामक कार्यक्रम में दादी ने मुख्य वक्ता के रूप में प्रवचन प्रस्तुत किया।

- जून 2005 में दादी जी को Kashi Humanatarian Award प्रदान किया गया।

- दिल्ली में सम्पन्न द्वितीय International Congress of Mothers, मास्को की एक संस्था द्वारा आयोजित कार्यक्रम में दादी ने मुख्य वक्ता के रूप में अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया।

- 2003

- यरूशलम में सम्पन्न World Congress of Religious Leaders के सम्मेलन में दिसम्बर में दादी ने भाग लिया।

- जून 12-14 के बीच ओस्लो में Global Peacd Initiative of Women Religious & Spiritual Leaders द्वारा आयोजित कार्यक्रम में दादीजी ने मुख्य वक्ता के तौर पर अपने विचार रखे।

- लंदन के ओलंपिया कांफ्रेंस सेंटर द्वारा आयोजित Mind, Body and Soul Exhibition में Quiet Room का उद्घाटन योगशक्ति राजयोगिनी दादी जानकी जी ने किया।

- सेलडोनियन थियेटर ऑक्सफोर्ड में Through the Brain Barrier नामक विषय पर दादी जानकी, प्रो. कोलिन ब्लैकमोर एवं डॉ. पीटर फेनविक के बीच एवं डायलॉग चला।

-2002

- बर्मिंघम में आयोजित 'Respect, Its All About Time' नामक कार्यक्रम में दादी जी प्रिंस ऑफ वेल्स सहित अनेक आध्यात्मिक नेताओं के साथ शामिल हुईं।

- मैड्रिड में द्वितीय " UN World Summit on Sustainable Development" के लिए एक प्रतिनिधि मंडल का दादीजी ने नेतृत्व किया।

- दादीजी ने जेनेवा में आयोजित "The Global Peace Initiative of Women Religious & Spiritula Leaders" नामक सम्मेलन में भाग लिया।

- 2000

- Wings of Soul नामक दादीजी के दूसरे पुस्तक का विमोचन संम्पन्न हुआ।

- Pearls of wisdom नामक दादी जी के तीसरे पुस्तक का भी विमोचन हुआ।

- 1999

- जेनेवा में आयोजित UN World Summit on Social Development के लिए दादीजी ने एक

प्रतिनिधि मंडल का नेतृत्व किया।

- स्वीटजरलैंड में आयोजित कार्यक्रम The Human Aspects of Social Integtration में दादीजी ने अपनी प्रस्तुति दी।

- न्यूयार्क के यू एन जनरल एसेम्बली हॉल में Millenium World Peace Summit of Religious and Spiritual Leaders नामक एक कार्यक्रम में दादीजी ने ब्रह्माकुमारीज प्रतिनिधि मंडल को अपना नेतृत्व दिया और अपना वक्तव्य भी प्रस्तुत किया।

- State of World Forum न्यूयार्क में अपनी प्रस्तुति दी।

- 1997

- ग्लोबल अस्पताल एवं शोध संस्थान, आबू पर्वत के कार्यों के सफल संचालन के लिए दादीजी ने जानकी फाउंडेशन फार ग्लोबल हेल्थ केयर नामक संस्थान को अपना नाम प्रदान किया। इससे सम्पूर्ण स्वास्थ्य एवं हेल्थ केयर के क्षेत्र में आध्यात्मिकता के योगदान के प्रति लोगों के नजरिये में बदलाव आया।

1996

- दादी जानकी की अंग्रेजी पुस्तक 'कम्पेनियन ऑफ गॉड' का विमोचन किया।

- इस्ताम्बलुल, टर्की में आयोजित संयुक्त राष्ट्र के सेटलमेण्ट - 2 नाम सम्मेलन में दादीजी ने एक प्रतिनिधि मंडल का नेतृत्व किया।

- उक्त सम्मेलन में विश्व के विभिन्न सरकारों को दादीजी ने मानवोन्मुख विकास, मनुष्यों की भूमिका एवं आध्यात्मिक मूल्यों के संदर्भ में उनके कार्यकलाप क्या हों, इसकी जानकारी दी।

- दुनियां के 60 से भी अधिक देशों के बच्चों को सिखलाई जा रही लिविंग वैल्यूज एन एजुकेशनल इनिशियेटीव का शुभारम्भ किया। यूनीसेफ से सम्बंद्ध शिक्षाविदों के साथ मिलकर दादीजी ने इसका प्रारंभ किया।

- State of The World Forum, San Francisco में एक वक्ता के रूप में भाग लिया।

- सिंगापुर में 5000 लोगों की उपस्थिति में अपनी पुस्तक 'कम्पेनियन ऑफ गॉड' का चायनीज भाषा में विमोचन किये जाने का अवसर पर दादीजी उपस्थित थीं।

- यूनीसेफ की 50 वीं वर्षगॉठ के असर पर 'यंग वोमेन ऑफ विजडम' नामक कार्यक्रम का शुभारम्भ किया।

- 1995

- बीजिंग, चाइना में आयोजित UN 4th World Conference on women के लिए दादीजी ने एक प्रतिनिधि मंडल का नेतृत्व किया।

- राजनीति, विज्ञान, शिक्षा एवं स्वास्थ्य के क्षेत्र में मूल्यों के विकास का लक्ष्य रखते हुए Sharing Our Values For A Better World नामक एक वैश्विक कार्यक्रम का आयोजन किया गया था, जिसका प्रारम्भ दादीजी के कर कमलों से सम्पन्न हुआ।

- 1993

- Inter-Religious Understanding And Co-operation नामक यू के में आयोजित एक कार्यक्रम की मेजवानी दादीजी ने की। इस कार्यक्रम में विभिन्न मतों के 600 से भी अधिक लोगों ने हिस्सा लिया।

- दादीजी 'वर्ल्ड कांग्रेस ऑफ फेथ' की उपसभापति चुनी गयी।
- ऑक्सफोर्ड के नजदीक ग्लोबल रीट्रिट सेन्टर की स्थापना के निमित्त बनी।

1991

- दादीजी के प्रयत्नों से लंदन में ग्लोबल कोआपरेशन हाऊस का शुभारम्भ हुआ जिसके द्वारा समाज के विभिन्न वर्गों को एक छत के नीचे लाने का कार्य सम्पन्न हो रहा है तथा शैक्षणिक कार्यक्रमों के द्वारा लोगों के जीलवन में सकारात्मक परिवर्तन लाया जा रहा है।

- 1998

- हाऊस ऑफ लार्डस, लंदन में युनाईटेड नेशंस पीस मैसेंजर कार्यक्रम एवं ग्लोबल कोआपरेशन फार ए बेटर वर्ल्ड का पहली बार आगाज किया गया। दुनियां के 129 देशों में गलियों के बेसहारा बच्चों से लेकर देश के प्रधानमंत्रियों तक ने स्व सेवा, सामुदायिक कार्यक्रमों की शुरुआत की अथवा इसमें शिरकत की।
- संयुक्त राष्ट्र द्वारा घोषित अंतर्राष्ट्रीय शांति वर्ष के अवसर पर 'मिलियन मिनट्स ऑफ पीस अपील' नामक एक महत्तम धनोपार्जन रहित कार्यक्रम दुनियां के 88 देशों में आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम को संयुक्त राष्ट्र ने 7 शांति दूत पुरस्कार प्रदान किए।

- 1983

- दादीजी प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की संयुक्त मुख्य प्रशासिका बनीं।
- 1974 से लेकर आजतक
- प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्याल के विस्तार को 84 देशों में अपना सफल प्रशासन प्रदान करना तथा पूर्व एवं पश्चिम की हर प्रकार की संस्कृति को वैश्विक आध्यात्मिकता का आधार देना।
- दुनियां के 84 देशों का भ्रमण किया। अनेक सम्मेलनों आदि को सम्बोधित किया एवं विश्व के जाने-माने राजनीतिज्ञों एवं आध्यात्मिक हस्तियों से व्यक्तिगत रूप से मुलाकात कर आध्यात्मिकता की गूढ़ता को प्रकट किया।